सुपात्रदान

-: संकलनकार :-

वर्धमानतपोनिधि प. पू. आ. भ. श्रीमद्विजय

भुवनभानुसूरीश्वरजी म. सा. के प्रशिष्य

राजप्रभावक प. पू. आ. भ. श्रीमद्विजय

रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म. सा. के शिष्य

मुनिश्री **भव्यसुंदरविजयजी** म. सा.

-: प्रकाशक :-

श्रमणोपासक परिवार

C/o. किशोरभाई दोशी,

A/३०१, हेरिटेज होली, जवाहरलाल नेहरू रोड, मुलुंड (वे.),

मुंबई - ४००० ०८०. (मो.) 98691 48094

आवृत्ति : प्रथम **कीमत : ₹ २/-** **वि. सं. २०७१**

प्रस्तावना

जिनशासन में सुपात्रदान की महिमा अपरंपार है। अनेक उदाहरणों से यह महिमा प्रसिद्ध भी है और यही कारण है कि वर्तमान काल में भी श्रावकों में सुपात्रदान के लिए बड़ा उल्लास दिखाई देता है। गोचरी वहोरने के लिए जाने वाले सभी साधु भगवंतों को श्रावकों की अपार भक्ति का अनुभव होता है।

साथ ही अज्ञान और अविवेक के कारण खट्टे-मीठे अनुभव भी होते हैं, जैसे कि -

महाराज साहब के आते ही लाईट - पंखे, गैस बंद करना। अँधेरा हो तो लाईट चालू करना, छिलके के साथ केला वहोराना, गुटली के साथ आम वहोराना।

कई बार विचार आता था कि, इन लोगों को समझाये कैसे ?

ऋषभदेव भगवान के चरित्र में पहले भव में धन सार्थवाह भी आचार्य भगवंत को छिलके व गुटली के साथ ही आम वहोरने की विनती करता है और आचार्य भगवंत उसे समझाते हैं कि महाराज साहब प्रासुक (अचित्त) और एषणीय (निर्दोष) गोचरी ही वहोरते हैं।

यह प्रसंग का वर्णन करते हुए व्याख्यान में गोचरी विषयक समझ दादर आराधना भवन, गोरेगाँव - जवाहरनगर, मुलुन्ड - सर्वोदयनगर, कांदिवली - दहाणुकरवाडी संघों में देता था, सभा में से अनेक प्रश्न भी होते थे।

कांदिवली चातुर्मास में एक श्रावक ने विनती की कि "प्रवचन में तो सब लोग नहीं आते, यदि इस विषयक कोई पुस्तिका छपा दी जाये तो व्याख्यान में नहीं आने वाले श्रावकों को भी समझ मिलेगी। आप लिखिए, मुझे पुस्तक छपाने का लाभ दीजिए।" उनकी विनती योग्य लगने पर

गुजराती में पुस्तक लिखी । उसके बाद यही विषय पर पू. मु. श्री न्यायरत्नविजयजी म. सा. की पुस्तिका – '**सुपात्रदान - विवेक**' एक श्रावक ने दी । उसमें से भी दो-तीन मुद्दे लेकर पुस्तक का लेखन पूर्ण किया । परमोपकारी प. पू. आ. भ. श्रीमद् विजय मुक्तिवल्लभसूरीश्वरजी म. सा. को मेटर भेजी, उन्होंने उसे परिमार्जित की और विशेष उपयुक्त बनायी । बाद में उसे लाभ लेने वाले श्रावक को दी, जो पुस्तिका के रूप में छपाई गयी ।

मेरे गुरुभाई प. पू. मु. श्री निर्मोहसुंदरविजयजी की विनती पर इसका हिन्दी अनुवाद किया, जो इस पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत है ।

यह पुस्तिका पढकर श्रावक – श्राविकाएँ सुपात्रदान के लिए ज्यादा उल्लसित बनें, विवेकयुक्त बनें और उत्तम लाभ को प्राप्त करें, ऐसी शुभाभिलाषा...

जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ भी लिखा गया हो, तो –

मिच्छा मि दुक्कडं ।

द. भव्यसुंदरवि.

चैत्र शुक्ला अष्टमी, वि. सं. २०७१

शैफाली, अहमदाबाद

प्रकरण – १

सुपात्रदान - भावना

१. सुपात्रदान की भावना से युक्त श्रावक अपना घर उपाश्रय से नजदीक और जैनों की विपुल संख्या वाले क्षेत्र में ही लेता है । कई धनवान लोग उपाश्रय से १-१॥ किलोमीटर की दूरी पर हाई सोसायटी में या बड़े टावरों में २०-२२ वी मंजिल पर (हवा खाने के लिए) घर लेते हैं, और बाद में शिकायत करते हैं कि हमें महाराज साहब का लाभ नहीं मिलता है । तब कहने का मन होता है – ''अरे भाई ! यदि 'सुपात्रदान का लाभ मिले' ऐसी भावना थी तो फिर इतनी दूर या इतनी ऊँचाई पर घर क्यों लिया ?''

सुपात्रदान जैसे उत्कृष्ट पुण्यबन्ध कराने वाले – सद्गति को निश्चित करने वाले सुकृत के सामने हाई सोसायटी या हवा की क्या कीमत है ? कहने का मन होता है कि, उपाश्रय के नजदीक की जगह महँगी हो और थोडी दूर पर सस्ती हो तो भी, थोडी तकलीफ सहन करके भी, छोटी जगह लेकर भी, भावनायुक्त श्रावक उपाश्रय से नजदीक ही घर लेता है ।

जो बिल्डींग में थोडी सीढियाँ चढने पर बहुत सारे जैनों के घर मिलते हैं, वहाँ गोचरी सुलभ बनने से महाराज साहब का लाभ बार बार मिलता है । जो बिल्डींग में जैनों के घर कम है या १-१ मंजिल पर १-२ घर है, वो बिल्डींग उपाश्रय से नजदीक होने के बावजूद महाराज साहब का लाभ कम व कभी कभी ही मिलता है । इसलिए भावनायुक्त श्रावक को जैनों की विपुल संख्या वाले मकान में व एरिया में ही रहना चाहिए ।

उपाश्रय से नजदीक और जैनों की अच्छी संख्या वाले क्षेत्र में रहने के अन्य फायदे भी है, जैसे कि संतानों में संस्करण, परिवार में धर्म की वृद्धि, कल्याणमित्रों का संग इत्यादि ।

२. चौमासे में बारिश से मकान के कम्पाउण्ड में यदि सीमेन्ट का कोबा या पेवर ब्लॉक्स का फ्लोरिंग हो तो उस के ऊपर हरी काई (शैवाल) हो जाती है, जो निगोद है; उसके प्रत्येक कण में अनन्त जीव होते हैं। उसके ऊपर चलने से आपको अनंत जीवों की हिंसा का पाप तो लगता ही है, ऊपर से महाराज साहब ज्यादातर ऐसे मकान में गोचरी के लिए आते ही नहीं और इसके कारण आप सुपात्रदान के महान लाभ से वंचित रह जाते हैं। इन दोनों नुकसानों से बचने के लिए बारिश आने से पहले ही कम्पाउण्ड में सफेद पट्टा करवा लेने से जयणा का पालन भी होता है और सुपात्रदान का लाभ भी मिलता है।

जहाँ बारिश बहुत होती है ऐसे मुम्बई जैसे क्षेत्रों में ऑइल पेन्ट का सफेद पट्टा टिकता नहीं है, उसके बदले वॉटर प्रुफींग के केमिकल को व्हाइट सीमेन्ट में मिलाकर लगाने से पट्टा लम्बे समय तक टिकता है।

३. हाई सोसायटी में सिक्योरिटी गार्ड, महाराज साहब को अंदर जाने नहीं देते हैं। ''किसके घर जाना है ?'' ऐसा पूछते हैं और पहले फोन से उससे पूछकर बाद में ही जाने देते हैं। संयमी महाराज साहब तो ऐसे फोन की विराधना से बचने के लिए ऐसे मकान में जाते ही नहीं।

वास्तव में श्रावक को अपने वॉचमेन को ऐसी ट्रेनिंग देनी चाहिए कि, महाराज साहब पधारने पर उन्हें रोकना नहीं, पूछना नहीं, किन्तु स्वागत करना चाहिए। एवं जैनों के घर सामने से दिखाने चाहिए।

उपाश्रय से नजदीक रहने वाले एक श्रावक ने अपने वॉचमेन को कह रखा था - कोई भी महाराज साहब रोड़ पर से निकले तो उन्हें पधारने की विनती करना और मेरे घर लेकर आना, यदि महाराज साहब आयेंगे तो तुझे ५० ₹ बक्षिस दूँगा।

४. भावना युक्त श्रावक गोचरी के समय पर अपने घर के दरवाजे खुले ही रखते हैं। यदि दरवाजा खुला न छोड़ सके तो सिर्फ जाली ही बंद रखते हैं, जिससे महाराज साहब की ''धर्मलाभ'' की आवाज सुनाई दे।

दरवाजा खटखटाया जा सके व खटखटाने पर उसकी आवाज भी सुनाई दे ऐसी व्यवस्था श्रावक अवश्य करता है। कोई कोई श्रावक तो घर के अंदर लटकाई हुई घण्टी की डोरी बाहर लटकाते है, जिसे खिंचने पर घण्टी बजती है।

ऐसी व्यवस्था यदि आपके यहाँ नहीं है, तो संभव है कि, आपके घर में होने के बावजूद गोचरी के लिए पधारे हुए महाराज साहब वापस लौट जाए और आप सुपात्रदान से वंचित रह जाए।

और महाराज साहब जब वापस खाली लौट जाते हैं तो मानो अपने द्वार पर आया हुआ पुण्य लौट के जा रहा है।

५. श्रावक अभक्ष्य वस्तु का उपयोग नहीं करता है। मिठाई, नमकीन, अचार, पापड़ आदि सभी वस्तुएँ घर में ही बनाता है; बाजार से नहीं लाता है, यह श्रावक का आचार है। और ऐसे श्रावक को ही ऐसी वस्तुएँ महाराज साहब को वहोराने का लाभ मिलता है। ऐसे उत्तम द्रव्य बनाने की आलस के कारण बाजार से लाने वाली श्राविकाएँ महाराज साहब का लाभ लेकर अपना स्त्री-जन्म सफल करने का अवसर गँवा देती है।

यदि यह संभव नहीं हो तो भी कम से कम रोटी, दाल, चावल, सब्जी और दूध यह पाँच अति आवश्यक द्रव्य तो हमेशा के लिए भक्ष्य होने ही चाहिए। घर आये हुए महाराज साहब को इतनी चीज़ें भी वहोराई न जा सके, इतनी उपेक्षा तो नहीं ही होनी चाहिए।

उदाहरण ➙ फागुन सुद १४ के बाद दाल में हरा धनियाँ नहीं डालना चाहिए।

➙ दोपहर के वक्त दूध फ्रीज़ में नहीं रखना चाहिए।

कोई खास कारण के अलावा मात्र स्वाद के खातिर ही रोटी - दाल - चावल - सब्जी भी जो अभक्ष्य बनाते हैं, उसे महाराज साहब का लाभ लेने की भावना है या नहीं ? उसकी भी शंका होती है।

६. घर आये हुए मेहमानों को रसोई परोसी जाए, परन्तु पानी न दिया जाए तो कैसा लगेगा ?
महाराज साहब को वंदन करते वक्त, ''भात-पाणीनो लाभ देजोजी'' कहने के बाद यदि महाराज साहब आपके घर आते हैं और उबाले हुए पानी के लिए पूछते है, तो मिलेगा ना ?
नहीं, महाराज साहब के लिए पानी उबालने का मैं नहीं कह रहा हूँ। और यदि ऐसा करोगे, तो घर में से पानी वहोरने वाले महाराज साहब ज्यादातर तो निर्दोष पानी के ही इच्छुक होने के कारण नहीं वहोरेंगे। वास्तव में श्रावक सचित्त का सर्वथा त्याग करने वाला होता है। कम से कम घर में तो उबाला हुआ ही पानी पीना चाहिए, जिससे उत्तम संयम के धारक महाराज साहब यदि आते हैं, तो सहज ही लाभ मिल जाता है। कभी तपस्वी साधर्मिकों का लाभ भी मिल जाता है। आरोग्य अच्छा रहेगा वो तो ऊपर का फायदा है। गोचरी की अपेक्षा पानी का लाभ एक दृष्टिकोण से ज्यादा बड़ा होता है।

७. ज्यादातर महाराज साहब जैनों के घर पर ही गोचरी के लिए जाते हैं, इसलिए घर के बाहर ''यह जैन का घर है'' ऐसा मालूम हो ऐसी व्यवस्था श्रावक अवश्य करता है। दरवाजे पर अष्टमंगल का पट या ''जैनम् जयति शासनम्'' या ''जय जिनेन्द्र'' का स्टीकर श्रावक के घर को पहचानने का सरल उपाय है।

८. भोजन करने के पूर्व श्रावक को अवश्य याद करना चाहिए कि ''आज महाराज साहब का लाभ मिला है या नहीं ?'' यदि मिला हो तो उस दिन को धन्य मानता है, न मिला हो तो व्यर्थ मानता है।

卐 卐 卐

प्रकरण - २

सुपात्रदान - विनंती

हर श्रमणोपासक श्रावक अपने नजदीक में विराजित श्रमण भगवंतों के दर्शन-वंदन के लिए अवश्य जाता है और लाभ देने की विनती भी अवश्य करता है।

१. ''भात-पाणीनो लाभ देजोजी'' इस वाक्य में भात का अर्थ मात्र चावल नहीं है, रोटी इत्यादि सभी प्रकार का आहार है। इसी तरह 'भात-पाणी' का अर्थ सिर्फ आहार - पानी ही नहीं किन्तु वस्त्र-पात्र-औषधि आदि सबकुछ समझना है।
इन चीज़ों की जरूरत कभी भी - रात को भी पड़ सकती है, और ऐसी चीज़ों को सामायिक या पौषध में रहे हुए श्रावक भी वहोरा सकते हैं। अतः श्रावकों को किसी भी समय पर (शाम को भी) वंदन करते समय भी यह वाक्य बोलना ही चाहिए। सामायिक या पौषध में रहे हुए श्रावकों को भी बोलना चाहिए।

२. वंदन के दौरान ''भात-पाणीनो लाभ देजोजी'' बोलने के बाद वंदन पूरा होने पर वस्त्र, पात्र, औषध, स्टेशनरी इत्यादि सभी चीज़ों के लाभ की माँग अपनी शक्ति के अनुरूप करनी चाहिए। और अन्य कोई भी कार्य जैसे पत्र भेजना, कोई चीज़ मँगवाना इत्यादि के लिए पूछना चाहिए।
पूछने वाले को पहले लाभ मिलेगा, यह सहज है। दवाई का खप होने पर भी वंदन कर के चले जाने वाले श्रावक को महाराज साहब नहीं कहेंगे - यह संभव है, क्योंकि उसकी शक्ति - अनुकूलता - भावना का खयाल नहीं होता। लाभ मांगने वाले की भावना दिखाई देती है, इसलिए महाराज साहब उसे लाभ दे देते हैं। हाँ, यदि लाभ न मिले तो भी पूछने वाले श्रावक को पुण्य का बंध तो होता ही है।

३. कई श्रावक गोचरी की विनंती करने के बाद पूछते हैं – ''महाराज साहब दोपहर को / शाम को / कल मेरे यहाँ आओगे ?'' ऐसा पूछना अविवेक है । विनती करने का श्रावक का आचार है, पूछने का अधिकार श्रावक को नहीं है और साधु भगवन्तों का यह आचार नहीं है कि वे बता दें कि मैं कल या दोपहर को आऊँगा । उनका प्रत्युत्तर तो हमेशा ''वर्तमान जोग'' ही रहता है । कई बार श्रावक यह बात समझते ही नहीं और हाँ भरने का आग्रह रखते हैं । उन्हें समझना चाहिए कि, महाराज साहब कभी ऐसा वचन दे नहीं सकते । वास्तव में तो वे तय भी नहीं कर सकते कि ''कल इनके यहाँ जाऊँगा ।'' तो कह कहाँ से सकेंगे ?

४. कई श्रावक गोचरी की विनती करने के बाद पूछते हैं – ''साहबजी, लेने को आऊँ ?'' ऐसा पूछना भी अविवेक है । गोचरी के समय पर लेने को आना, यह श्रावक का आचार है । और ऐसी भावना हो तो आ जाना चाहिए, पूछने की जरूरत नहीं है । पूछने पर महाराज साहब ना नहीं कह सकते, क्योंकि लेने को आना यह श्रावक का आचार होने के कारण उसका निषेध नहीं हो सकता । इसी तरह हाँ भी नहीं कह सकते, क्योंकि हाँ कहने पर आने में श्रावक जो विराधना करता है, उसका दोष लगता है और हाँ कहने पर श्रावक घर जाकर दोषित आहार भी बनाये ऐसा हो सकता है ।

वास्तव में 'लेने को आऊँ ?' ऐसा पूछने के पीछे आशय यह होता है कि ''आप मेरे घर आयेंगे यह निश्चित हो तो ही मैं लेने को आऊँ, ताकि मेरा समय न बिगडे ।'' इस तरह महाराज साहब को बाँधा नहीं जा सकता ।

समय पर लेने के लिये जाने वाले को लाभ मिलने की शक्यता बढ़ जाती है ! कदाचित् महाराज साहब न आयें तो भी जीरण सेठ की तरह भावना एवं विनती के कारण पुण्यबंध अवश्य ही होता है । समय नहीं बिगडता, भव सुधर जाता है ।

५. बहुत कम घरों में शाम को समय पर रसोई तैयार होती है इसलिए जिसके घर में किसी को भी बियासणा हो या सभी लोग रात्रिभोजन के त्यागी हो और इस कारण रसोई जल्दी हो जाती हो तो उन्हें विशेष तौर पर महाराज साहब को विनती करनी चाहिए, क्योंकि उन्हें लाभ मिलने की संभावना बहुत ज्यादा होती है ।

६. घर में या बाहर धार्मिक या सांसारिक किसी भी प्रसंग पर भोजन हो और उसमें शुद्ध भक्ष्य द्रव्य हो तो (दूसरे द्रव्य अभक्ष्य होने पर भी) महाराज साहब का लाभ मिल सकता है । ऐसे विशिष्ट व उत्तम द्रव्यों का निर्दोष लाभ मिलने का दुर्लभ और अमूल्य अवसर कौन श्रावक चूकेगा ? ऐसे अवसर पर विशेष में विनती करनी चाहिए – ''हमारे यहाँ भोजन है, लाभ दीजिएगा ।''

७. बाजार का, होटल का नहीं खाने की प्रतिज्ञा वाले श्रावक यात्रा या प्रवास के दौरान मिठाई – नमकीन के डिब्बे अपने साथ रखते हैं । संभव है कि उससे विहार में रहे हुए या जहाँ निर्दोष गोचरी दुर्लभ है ऐसे स्थल (विहारधाम इत्यादि) में रहे हुए संयमधारक महाराज साहब का उत्तम लाभ मिले, यदि याद रखकर विनती की जाये । इसलिए यात्रा करने को जाने पर यदि साथ में भाता हो तो उपाश्रय में जाकर साधु-साध्वी भगवंतों को विनती करनी चाहिए ।

प्रकरण – ३

साथ में जाना

श्रावक, विनती करके महाराज साहब को अपने घर तो ले ही आता है, साथ में दूसरे घर भी दिखाता है, साथ में जाता भी है, उपाश्रय तक साथ में रहता है। उस वक्त इतना ध्यान रखें।

१. महाराज साहब आपके घर पर पधार रहे हैं ऐसा मालूम पड़ने पर उत्साह में आकर मोबाइल फोन से यदि घर में बताया तो संभव है कि, संयमधारक महाराज साहब ऐसी विराधना के कारण आपके घर नहीं आयेंगे। इसलिए ऐसा अतिरेक नहीं करना चाहिए। आसपास में अन्य घरों के लिए भी यह समझ लेना चाहिए।

२. किसी भी घर की डोरबेल न बजायें। जरूरत पड़ने पर दरवाजा खटखटा सकते हैं।

३. रास्ता दिखाने के कारण के अलावा महाराज साहब के आगे नहीं चलना चाहिए, पीछे चलना चाहिए, यह विनय है।

४. रास्ते में यदि पानी-घास, सैवाल हो तो उसके ऊपर ना चलें।
कई बार श्रावक महाराज साहब का ध्यान खींचते हैं – "महाराज साहब ! यहाँ पानी है, इस ओर से आईये।" और वह खुद उस पानी के ऊपर ही चलता है। अरे भाई ! पानी पर चलने से महाराज साहब को ही पाप नहीं लगता, आपको भी लगता है। इतना ही नहीं, यदि महाराज साहब को रास्ता दिखाने वाला विराधना करता है, तो महाराज साहब को भी पाप लगता है। इसलिए इसका ध्यान रखें।

५. बाहर से ही "रोटी बन गई है ? रसोई तैयार है ? जोग है ?" ऐसे प्रश्न किसी को न करें। "महाराज साहब पधारे हैं।" इतनी जानकारी मात्र दें। बाकि जो पूछना है, वह महाराज साहब पूछेंगे।

६. महाराज साहब के साथ किसी के रसोईघर तक न जाए। उसमें औचित्य का भंग है। बाहर खडे रहें।

७. कोई द्रव्य (उदा. दाल) की विनती होने पर "इसमें धनिया तो नहीं डाला ?" ऐसे कोई प्रश्न न करें ! यह आचार महाराज साहब का है। उनको जरूरत लगेगी तो पूछ लेंगे। इसी तरह "यह नहीं चलेगा।" ऐसा भी ना कहें। इसी तरह यदि महाराज साहब ने एक घर में कोई चीज़ (जैसे दूध) की याचना की हो, तो दूसरे घर में आप ही न पूछें कि "दूध है ?"
यह सब महाराज साहब का आचार है और वे द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव (सामने की व्यक्ति – उसकी स्थिति – भावना) इत्यादि देखकर जो कुछ पूछने जैसा है, वह पूछेंगे।

८. जमीकंद खाने वालों के घर पर महाराज साहब जाते ही नहीं, ऐसा कोई नियम नहीं है। ऐसे घरों में से भी रोटी-चावल-दूध जैसी चीज़ें या जमीकंद न डाला हो ऐसी दाल – सब्जी महाराज साहब वहोरते ही है। इसलिए ऐसे घरों में भी जाने के लिए यदि महाराज साहब तैयार है तो ले जायें। "ये लोग तो जमीकंद खाते हैं" ऐसा कहकर मना न करें। इसी तरह अंतराय (M.C.) का पालन न करने वाले के घर पर भी बाकी के दिनों में महाराज साहब जाते हैं।

९. स्थानकवासी, दिगम्बर या अजैन अन्यधर्मी भी यदि महाराज साहब का स्वागत करने के लिये तैयार हो तो उनके घर पर भी ले जायें। वास्तव में तो आपके मकान में रहने वाले (यदि जैनों के घर कम हो तो खास) भद्रिक अजैनों को समझाना चाहिए – "हम तो एक ही घर से सब कुछ देने को तैयार होते हैं, पर हमारे महाराज साहब हर घर में से इस तरह थोडा थोडा ही लेते हैं कि किसी को फिर से बनाना ना पड़े। इसलिए ही वे अनेक घरों में जाते हैं। आपकी भावना हो तो आपके घर भी आयेंगे। आपको भी लाभ मिलेगा।" और यदि वे अपनी भावना दिखाएँ तो क्या क्या वहोरा सकते हैं ये भी समझाना चाहिए।

ऐसा करने से वे भी पुण्य का बंध करेंगे, महाराज साहब के प्रति आदर के कारण बोधिबीज प्राप्त कर सकते हैं। और महाराज साहब को निर्दोष गोचरी सरलता से उपलब्ध होगी और इसके कारण आपको भी बार – बार लाभ मिलेगा।

卐 卐 卐

प्रकरण – ४

स्वागत

वर्तमानकाल में श्रमण भगवंतों से अधिक गुणवान कोई नहीं। इसलिए महाराज साहब अपने घर पधारें, इससे बड़ा आनन्द का अवसर श्रावक के लिए क्या हो सकता है ? श्रावक भक्तिपूर्ण हृदय से उनका स्वागत करता है।

१. महाराज साहब आने पर खड़ा होना, सामने जाना, 'पधारिए साहबजी' इत्यादि शब्दों से स्वागत करना, यह विनय है। और महाराज साहब के आने पर भी अखबार पढ़ते रहना, टी.वी. देखते रहना, टेलीफोन पर बातें करते रहना, यह अविनय है, अनादर है, आशातना है।

२. घर में जो भी लाईट या पंखे आपके लिये ही चालू है, उसे महाराज साहब आने पर बंद करने की जरूरत नहीं है। आपके लिये चालू किये गये पंखे इत्यादि के नीचे सिर्फ गोचरी वहोरने जितना समय खड़े रहने में महाराज साहब को कोई दोष नहीं लगता। उल्टा यदि उनके लिए बंद किया जाय तो संभवित है कि वे कुछ भी वहोरे बिना ही चले जायें।

   अंधेरा होने के कारण लाईट चालू भी नहीं करनी चाहिए। महाराज साहब के आने पर टी.वी., रेडियो इत्यादि बंद करना यह औचित्य है।

३. दरवाजे से रसोईघर तक के रास्ते में यदि पानी या वनस्पति (सब्जी, दानें, धान्य इत्यादि) पडे हो तो भी पोंछना / खिसकाना नहीं चाहिए। महाराज साहब थोड़ा घूमकर आयेंगे, ध्यान से पैर रखते हुए आयेंगे। बारिश में जरूरत होने पर पानी के ऊपर पैर रखकर भी आयेंगे, किन्तु पानी पोंछने में या वनस्पति खिसकाने में तो ज्यादा विराधना है, संभवित है कि महाराज साहब बिना वहोरे ही चले जायें।

यदि पोंछा किया होने के कारण फर्श गीली हो तो भी पंखा चालू करके न सूखायें। दूसरे घर जाकर आयें तब तक अपने आप सूख जाने पर महाराज साहब आ सकते हैं, पर पंखा चालू करके सूखाने पर तो शायद आयेंगे ही नहीं।

४. महाराज साहब के आने पर उनके कारण गैस बंद ना करें। हाँ, दूध - दाल - चाय उफनने के कारण बंद करना पड़े तो उसमें महाराज साहब को दोष नहीं लगता। परन्तु "चालु गैस पर रखी हुई चीज़ महाराज साहब नहीं वहोरेंगे।" यह समझकर वह चीज़ वहोराने के लिये यदि गैस बंद करोगे तो संभव है कि महाराज साहब कुछ भी वहोरे बिना चले जायेंगे।

५. रसोई जहाँ है वहाँ से वहोरना यह महाराज साहब का आचार है, इसलिए कोई खास कारण के बिना रसोई बाहर ना लायें।

६. कई बार महाराज साहब आने के आनन्द - उत्साह में जल्दबाजी होती है, उसके कारण किसी चीज़ का गिरना, टूटना आदि कार्य हो जाते हैं। उत्साह अनुमोदनीय है, किन्तु जल्दबाजी ना करें, धीरज से काम करें।

७. महाराज साहब ब्रह्मचर्य व्रत के धारक है, विजातीय की परछाई भी नहीं लेते। बहनें महाराज साहब के सामने उपस्थित होने से पहले वेश की मर्यादा अवश्य धारण करें।

८. "आप का गाँव / ज्ञाति / समुदाय कौन सा है ?" जैसे प्रश्न ना करें। प्रत्येक श्रमण जिनशासन के हैं।

९. कोई प्रश्न हो तो उपाश्रय जाकर वंदन करके बड़े महाराज साहब को पूछना चाहिए। गोचरी के लिए आए हुए महाराज साहब को ही पूछ लेना, यह अविनय है, अविवेक है।

१०. अशक्त, मरीज़, वृद्ध आदि के अलावा मांगलिक सुनने का आग्रह ना करें।

११. यदि महाराज साहब के पास पच्चक्खाण लेना हो तो उपाश्रय जाकर वन्दन करके लेना चाहिए। गोचरी के लिये आये हुए महाराज साहब के पास ही पच्चक्खाण ले लेने की वृत्ति ठीक नहीं है।

१२. "मत्थएण वंदामि" ऐसा फिट्टावंदन किया जा सकता है। परन्तु विधिवत् वंदन करना हो तो उपाश्रय जावें।

१३. रसोई तैयार न होने पर "रसोई तैयार नहीं है।" ऐसा कहकर महाराज साहब को दरवाजे में से हीं वापस ना भेजें। अंदर पधारने की विनती करके सूखा मिठाई, नमकीन, खाकरे, घी, दूध, गुड़, शक्कर, अचार इत्यादि की विनती कर सकते हैं।

कई बार ऐसा होता है कि ऐसी चीज़ों का खप होने पर भी जिनके घर रसोई तैयार है, उन्हें याद ना आने से ऐसी चीज़ों की विनती ही नहीं करते, और जिनके यहाँ रसोई तैयार नहीं उन्हें लाभ मिल जाता है।

१४. जन्म-मरण आदि के सूतक में सभी समुदाय के आचार अलग-अलग है। इसलिए ऐसे मौके पर अपने घर जो हुआ हो वो कह दें। बाद में यदि महाराज साहब को कल्प्य है, वो वहोरने के लिये तैयार हो, तो उल्लास के साथ लाभ लें, उसमें आपको कोई दोष नहीं लगेगा।

卐 卐 卐

प्रकरण – ५

वहोराना

सुपात्रदान पुण्यबन्ध का उत्कृष्ट प्रकार है। उसका लाभ मिलने पर श्रावक का आनंद निरवधि हो जाता है।

१. सभी द्रव्यों की विनती करे। पानी और रसोई के उपरांत दूध, दही, घी, गुड़, शक्कर, मिठाई, नमकीन, खाकरे, अचार, पक्का नमक, मसाले, साबून, डिटर्जेंट पॉवडर, वस्त्र, पात्र, आदि की विनती करने से लाभ मिल सकता है।

२. वहोराने के लिये हाथ ना धोवें। एक हाथ झूठा / खराब होने पर दूसरे स्वच्छ हाथ से वहोरा सकते हैं।

३. ज्यादा चम्मच – कटोरी ना बिगाडे। नये की जरूरत होने पर सूखें ले, गीलें ना ले। गीलें को पोंछकर भी ना लें।

४. कुछ भी गिरे नहीं, उसका ध्यान रखें।

५. भक्तिभाव के साथ विनती करें, आग्रह करें, किन्तु खप न होने पर भी बलात् डाल देना, पात्रे पकड़ लेना, जबरदस्ती करना यह भक्ति नहीं है, अविवेक है। जिसका खप ना हो ऐसी चीज़ महाराज साहब को दिक्कत कर सकती है, इतना याद रखें।

६. छोटे बच्चों को वहोराने का उत्साह होता है। उन्हें "तुझे नहीं आयेगा, गिरा देगा।" ऐसा कहकर दूर ना करें। बुलाकर, हाथ पकड़कर वहोराना सिखायें, संस्कार दें। नहीं तो बडे होने पर घर में आप नहीं है और महाराज साहब आयें तो कह देंगे – "घर में कोई नहीं है।"

७. किसी भी चीज़ के लिये "आप वापरते हैं ? चलेगा ?" ऐसा ना पूछें। जो भी चीज़ तैयार है (सचित्त नहीं है) उसकी विनती करें। महाराज साहब को जो पूछना है, वह पूछेंगे। अकल्प्य होगा तो नहीं वहोरेंगे। कोई चीज़ यदि नहीं वहोरते तो "नियम है ? वापरते नहीं ?" ऐसे प्रश्न भी ना करें।

८. महाराज साहब का लाभ मिलने पर श्रावक का भक्तिभाव इतना उछलता है, कि खुद का विचार किये बिना सबकुछ वहोराने को उल्लसित हो जाता है। मिठाई का डिब्बा या दूध का बर्तन उल्टा ही कर देते हैं, रोटी की पूरी थप्पी ही वहोरा देते हैं। महाराज साहब इतना वहोरते नहीं है, सबके यहाँ से थोड़ा थोड़ा ही लेते हैं, पर श्रावक का भाव तो ज्यादा से ज्यादा लाभ लेने का ही होना चाहिए। "कितनी रोटी लूँ ?" ऐसा कभी पूछता नहीं, २-४ रोटी ही नहीं लेता, दाल-सब्जी कटोरी में निकालकर नहीं लेता।

९. कोई भी चीज़ लेने में या रखने में कच्चा पानी, नींबु, सब्जी इत्यादि सचित्त वस्तु का स्पर्श न हो जाये, यह ध्यान में रखें। यहाँ बराबर समझ लें – वहोराते वक्त वहोराने वाले व्यक्ति का या वहोराइ जाती वस्तु का दूसरी सचित्त चीज़ का साक्षात् स्पर्श (संघट्टा) होता है तो महाराज साहब वहोरते नहीं। पर यदि संघट्टा परम्पर है और इस तरह वहोराया जाय कि सचित्त द्रव्य हिलता नहीं या उनमें रहे जीव को पीड़ा ना हो तो महाराज साहब वहोरते हैं।

उदाहरण → फ्रीज़ बिजली से चलता है, किन्तु फ्रीज़ के ऊपर पडी हुई चीज़ लेने में फ्रीज़ में चल रही बिजली के जीवों को कोई पीड़ा नहीं होती, इसलिए ऐसी वस्तु वहोरने में कोई दोष नहीं होता है।

→ जिसकी जेब में मोबाइल है या हाथ में घड़ी है ऐसा व्यक्ति यदि वहोराता है, तब भी मोबाइल या घड़ी में चल रही बिजली के जीवों को भी पीड़ा नहीं होती। इसलिए ऐसे व्यक्ति के हाथों से वहोरने में भी कोई दोष नहीं होता है।

→ ऐसा ही स्थिर (न हिलने वाले) पानी के मटके के ऊपर पड़े हुए दही के बर्तन के लिए भी समझ लें।

- ऐसा ही प्लेटफॉर्म या न हिलने वाले डाईनींग टेबल पर एक ओर हरी सब्जी इत्यादि पड़े हो तो भी दूसरी ओर पड़ी हुई रसोई के लिए भी समझ लें।
- एक बर्नर चालू है ऐसे स्टव का दूसरा बर्नर बंद है और उसके ऊपर पड़ी हुई वस्तु इस तरह वहोराया जाय कि स्टव हिले नहीं, तो वह भी महाराज साहब वहोरते हैं।
- इसी तरह चूल्हे में जलते हुए कोयले हो, ऊपर बर्तन पड़ा हो, बर्तन कोयले को न छू रहा हो तो वह बर्तन नीचे उतारकर उसमें पड़ी हुई वस्तु वहोराई जाए तो महाराज साहब वहोर सकते हैं। वास्तव में तो कोयले या बड़े गैस की ज्वाला बर्तन को छूती हो, पर बर्तन इतना बड़ा और वजनदार हो कि उसमें से चम्मच से वहोराया जाय तो बर्तन जरा भी हिले नहीं, और चम्मच से कुछ भी ज्वाला में गिरे भी नहीं ऐसे वहोराया जाय तो भी महाराज साहब वहोर सकते हैं।

यह बात ‘‘पिंडनिर्युक्ति’’ नामक आगम में कही गयी है।

१०. सामान्यतया तो कच्चे पानीवाले गीले हाथ से वहोराया जाये तो महाराज साहब वहोरते नहीं है, पर शास्त्रों में बताया है कि गीले हाथ में लगा हुआ पानी भी थोडे समय बाद अचित्त हो जाता है।

११. वहोराने के बाद हाथ ना धोवें। आपको इतना विवेक है, यह श्रद्धा रखकर ही महाराज साहब वहोरते हैं।

१२. वहोराने के बाद महाराज साहब के वापस लौटते वक्त ‘‘फिर से पधारियेगा, लाभ दीजियेगा’’ इत्यादि शब्दों से भावपूर्ण विनती करनी चाहिए। महाराज साहब के साथ अन्य घर दिखाने को और अन्ततः उपाश्रय तक जाना चाहिए।

१३. पूर्व में व्यवस्था ही ऐसी थी कि रोटी बनाते समय घी नहीं लगाया जाता था, परोसते वक्त ही घी लगाया जाता था। इसके कारण महाराज साहब को आयंबिल के लिये लूखी रोटी का खप हो तो सहज ही निर्दोष लाभ मिलता था। अब के दिनों में रोटी बनाते वक्त ही घी लगाया जाता है। इसके कारण तपस्वी जो १००-२०० ओलियों के तपस्वी हो सकते हैं, जीवनभर आयंबिल करने वाले हो सकते हैं, साल में ६-८ महिने आयंबिल करने वाले हो सकते हैं, ऐसे महाराज साहब का उत्तम लाभ नहीं मिल पाता है।

१४. कोई भी महाराज साहब का नाम लेकर कोई भी चीज़ ना वहोरायें। जैसे कि ‘‘यह बालमुनि / बुजुर्ग महाराज साहब / तपस्वी महाराज साहब को चलेगा’’ कहकर ना वहोरायें। इसी तरह ‘‘तीन ठाणे हैं, तो सबकी एक - एक = तीन रोटी तो लेनी ही पडेगी’’ ऐसे गिनती करके ना वहोरायें।

प्रकरण – ६

प्रश्नोत्तर

प्रश्न : महाराज साहब को क्या खपता है ? क्या नहीं ? इसका हमें पता ही नहीं होता, तो किसकी विनती करें ? किसकी ना करें ?

उत्तर : महाराज साहब मुख्य रूप से तीन प्रकार की चीज़ें नहीं वहोरते :

१. सचित्त : जिसमें जीव है ऐसी चीज़ें – जैसे कि कच्चा पानी, कच्चा नमक, बीजवाले फल, न सुधारे हुए फल इत्यादि।

२. संसक्त : जिसमें जीवोत्पत्ति हो गई हो, ऐसी संभावना वाली चीज़ें – जैसे कि द्विदल (कच्चे दूध-दही के साथ मूँग-चने इत्यादि कठोल), वासी (कच्ची मिठाई, बंगाली मिठाई, कच्चा मावा, कच्ची चासनी की मिठाई दूसरे दिन वासी होती है)।

३. दोषित : महाराज साहब के लिये ही बनाई हुई चीज़ें।

इसके उपरांत जमीकंद इत्यादि से बनाई हुई चीज़ें भी नहीं वहोरते।

इसके अलावा कोई भी चीज़ की विनती महाराज साहब को की जा सकती है। उनको कल्प्य होगा तो वहोरेंगे, अकल्प्य होगा तो नहीं वहोरेंगे। परन्तु 'उनको नहीं चलेगा' ऐसा मानकर विनती ही नहीं करोगे तो संभवित लाभ भी आप गँवा देंगे, ऐसा हो सकता है।

पर्वतिथि की मान्यता एवं अनेक चीज़ों की कल्प्यता – अकल्प्यता के बारे में अलग अलग समुदायों में सामाचारी अलग अलग है, इसलिए विनती करने से उनको कल्प्य हो तो लाभ मिल सकता है।

और यह ध्यान में रखें कि साधु भगवन्तों के आचार – कल्प्याकल्प्य के नियम श्रावक से अलग है, क्योंकि श्रावक अपने लिये बना सकता है, साधु को निर्दोष लेना है। इसलिए ऐसी अनेक चीज़ें हैं

कि जो श्रावक के लिए अकल्प्य होने पर भी साधु के लिए कल्प्य है। जैसे कि वर्तमान में आयंबिल में निर्दोष गोचरी ही वापरने वाले महाराज साहब आटा बाँधते वक्त थोड़ा सा तेल डाली हुई रोटी, खाकरे वहोरते हैं, पर श्रावक को आयंबिल में नहीं चलता। इसलिए –

१. "महाराज साहब वहोरते हैं इसलिए हमें भी चलेगा।" ऐसा कभी भी नहीं मानना चाहिए।
२. जिस चीज़ का आपको निषेध किया हो, वही चीज़ यदि महाराज साहब वहोरते हैं तो उतने मात्र से उनको शिथिलाचारी नहीं मान लेना चाहिए।

सचित्त या संसक्त चीज़ भूल से वहोरी गई हो और बाद में पता चलें तो उसको गृहस्थ को (जिनके पास से वहोरी हो उन्हें) वापस देना, यह महाराज साहब का आचार है, ऐसे वक्त वापस लेने से इन्कार न करें।

आखिर में यह ध्यान में रखें कि महाराज साहब को कई बार कारणवश छोटा दोष लगता हो तो भी वहोरना जरूरी हो तो वहोरते हैं। यह उनके लिए अपवाद मार्ग है। और उस वक्त वहोराने में श्रावक को लाभ ही है। इसलिए सचित्त, संसक्त के अलावा सभी द्रव्यों की विनती अवश्य करनी चाहिए।

प्रश्न : महाराज साहब अपने लिये बनाई हुई चीज़ नहीं वहोरते, तो कोई महाराज साहब हमें कोई चीज़ बनाने की सूचना करें तो हमें क्या करना चाहिए ? ऐसी चीज़ बनाकर वहोराने से हमें लाभ मिलेगा या दोष लगेगा ? महाराज साहब पधारेंगे ऐसा पता चलने पर / संभावना होने पर, सूचना किये बिना हम कोई चीज़ महाराज साहब के लिये खास बनाकर वहोराये, तो हमें लाभ मिलेगा या दोष लगेगा ?

उत्तर : परमात्मा के शासन में उत्सर्ग और अपवाद – ऐसे दो मार्ग है।

खुद के लिये बनाई चीज़ न वहोरना, यह महाराज साहब के लिए उत्सर्ग मार्ग है; इसी तरह कारण होने पर दोषित गोचरी वापरनी यह अपवाद मार्ग है। वह भी भगवान की आज्ञा ही है; ऐसा करने वाले महाराज साहब भी कर्म की निर्जरा ही करते हैं, पुण्य का ही बंध करते हैं यावत् केवलज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे कारण अनेक हो सकते हैं। जैसे कि -

१. बीमार साधु के लिये विशिष्ट द्रव्य की जरूरत हो।
२. वृद्ध साधु को खास द्रव्य ही अनुकूल होता हो, दूसरे द्रव्य प्रतिकूल हो।
३. प्रवचनकार / वाचनादाता / संघ के नेता ऐसे महाराज साहब को आरोग्य संभालने के लिये खास द्रव्य वापरना जरूरी हो।
४. मासक्षमण जैसी विशिष्ट तपश्चर्या के पारणे में खास द्रव्य ही वापरा जा सकता है।
५. साधुसमुदाय बड़ा हो, घर कम हो।
६. विहार के क्षेत्रों में घर ही ना हो।
७. बालमुनि के लिए खास द्रव्य की जरूरत हो।
८. शाम के समय पर गोचरी मिलती ना हो।
९. बारिश चालू होने के कारण / आने की संभावना होने के कारण नजदीक के घरों में से ही गोचरी वहोरनी पड़ती है।

ऐसे अनेक कारणों से महाराज साहब अपने लिए ही बनाया है, यह जानते हुए भी वहोरे या बनाने की सूचना करें, यह संभवित है।

ऐसे वक्त पर वहोराने वाले और वहोरने वाले दोनों को लाभ ही होता है, नुकसान या दोष जरा सा भी नहीं होता। इसलिए ऐसे अवसर पर श्रावक को अपार भक्तिभाव से वहोराना ही चाहिए।

दूसरी बात यह समझ लें कि यदि महाराज साहब ऐसे कोई कारण के बिना ही दोषित गोचरी वापर रहे हो (याद रखें कि कारण होने

की संभावना है ही, पर मान लिया जाये कि कारण न होने का आपको विश्वास है) तो उन्हें दोष लगता है, लेकिन उससे साधुता का नाश नहीं होता।

शास्त्रकारों ने निर्दोष गोचरी महाराज साहब का उत्तरगुण बताया है। जिसके मूलगुण (महाव्रत) सुरक्षित है, ऐसे साधु के उत्तरगुण में कमी हो तो उससे अतिचार लगता है, पर साधुता का नाश नहीं होता।

इसलिए उन्हें शिथिलाचारी न मान लें, अवंदनीय न मानें, दुर्व्यवहार ना करें, निंदा कदापि ना करें। दूसरों के सामने ऐसे दोष प्रकट ना करें।

काल विषम है, जीव के कुसंस्कार अनादिकालीन है, इसलिये महाराज साहब को भी कभी इच्छा हो जाये, वैराग्य मंद हो जाये, सत्त्व कम हो जाये, तो प्रमाद का सेवन हो, अतिचार हो, ऐसा संभव है।

अब आपका प्रश्न है, कि दोषित वहोराने में श्रावक को लाभ है या नुकसान ? तो उसका उत्तर :

१. निर्दोष गोचरी वहोराने वाले और योग्य कारण से दोषित गोचरी वहोराने वाले को विशिष्ट लाभ - पुण्य का बंध और कर्मनिर्जरा ही होती है।
२. जिन्हें पता ही नहीं कि महाराज साहब को अपने लिये बनाया हुआ नहीं चलता ऐसे (अजैन या अज्ञानी जैन) लोग भक्ति से दोषित वहोरायें तो उन्हें नुकसान नहीं होता, पर उपर बताये हुए लाभ की अपेक्षा कम लाभ होता है, क्योंकि उनके पास विवेक नहीं।
३. अन्य जीवों के लिए शास्त्रकारों ने उसके परिणाम के आधार पर लाभ - नुकसान बताये हैं। यह विषय बहुत गहन है, जिज्ञासा होने पर गीतार्थ गुरु भगवन्तो को पूछे।